INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

Arts

विचारों का केन्द्र मानव – मस्तिष्क (मूर्तिकार रॉबिन डेविड के मूर्ति शिल्प के विशेष संदर्भ में)

डा. लक्ष्मी श्रीवास्तव [1], प्रियंका शर्मा [2]

[1] शोध निर्देशिका, प्राध्यापक, चित्रकला एवं दृश्यकला, सरोजिनी नायडू शासकीय कन्या स्नातकोत्तर (स्वशासी) महाविद्यालय भोपाल, म.प्र.

[2] शोधार्थी, चित्रकला एवं दृश्यकला, सरोजिनी नायडू शासकीय कन्या स्नातकोत्तर (स्वशासी) महाविद्यालय भोपाल, म.प्र.

शोध-सारांश

शिल्पकार सृजन, सौंदर्य एवं विकास के वाहक है। परंपरागत शिल्पकार के बिना मानव सभ्यता, संस्कृति तथा विकास की परिकल्पना संभव नहीं है। शिल्पकारों में विभिन्न स्वरूपों में अपने कौशल से शस्यश्यामला धरती को सजाने–सँवारने में अपना महान योगदान दिया है। समस्त पाषणाओं से परे एक साधक की तरह परंपरागत शिल्पकार अपने औजारों के प्रयोग से मानव जीवन को सरल, सहज एवं सुंदर बनाने का उद्यम करते रहे हैं। आज समस्त सृष्टि जिस सुंदर रूप में दृष्टिगोचर हो रही है वह हमारे परंपरागत शिल्पकारों के अथक मेहनत एवं श्रम की ही देन है। यह एक ऐसा तथ्य है जिस पर हम गर्व कर सकते है।

मुख्य शब्द – मस्तिष्क, विचारों, मानव

Cite This Article: प्रियंका शर्मा, एवं डा. लक्ष्मी श्रीवास्तव. (2019). “विचारों का केन्द्र मानव – मस्तिष्क (मूर्तिकार रॉबिन डेविड के मूर्ति शिल्प के विशेष संदर्भ में).” *International Journal of Research -Granthaalayah*, 7(11SE), 18-20. https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v7.i11.2019.903.

ऐसे ही शिल्पकार मूर्धन्य मूर्तिकार रॉबिन डेविड 3 अक्टूबर 1949 में जन्में भारतीय मूर्तिकारों में अद्वितीय स्थान रखते है। आपका जीवन युवा कलाकारों के लिए मार्गदर्शन व प्रेरणा का भण्डार रूप है। उम्र के 70 साल पूरे कर चुके मूर्तिकार रॉबिन डेविड का प्रारंभिक जीवन ग्वालियर में बीता तथा वर्तमान में भोपाल में रहकर अपने कार्य को गति प्रदान कर रहें है। जिस तरह एक मूर्तिकार प्रतिकूल परिस्थितियों में भी इतिहास के पन्नों पर अपनी मेहनत व लगन को तराशकर सौन्दर्य प्रदान करता है जो वर्तमान और भविष्य में अपनी अमिट छाप छोड़ जाते हैं, मूर्तिकार रॉबिन डेविड द्वारा रची गयी कृतियों अद्भूत एवं उन्नत परंपरा से ओतपोत तथा भारतीय कला से समाविष्ट कलात्मक संवेदनाओं और संस्कृति की ऐसी ही धरोहर प्रतीत होते हैं। आपका कलात्मक कौशल स्वभाविक रूप से रचना संसार का प्रेरणा–स्रोत रहेगा।

आपका तकनीकी ज्ञान व उनका सुन्दरतम प्रयोग आप अपनी शैली वैशिष्टय के साथ इतने प्रभावपूर्ण रूप से करते है कि दर्शक अपने आप को उनमें खो जाने के लिए मजबूर कर देता है। आपके शिल्पों के माध्यम से कला–संस्कृति की यात्रा दर्शक को मानो कालयंत्र की यात्रा करवाते हुए स्तब्ध कर देता है। यह प्रभाव आपके तात्कालीन शिल्पों की श्रृंखला में दृष्टिगोचर होते है। प्रस्तुत शिल्प कालातीत श्रृंखला में विचारों का केंद्र

मानव मस्तिष्क सफेद संगमर्मर में 270 ग 375 ग120 से.मी. में बना आई.टी.एम. स्कूल ऑफ आर्किटेक्चर, आर्ट एण्ड डिजाइन, वडोदरा, गुजरात में स्थित है। प्रस्तुत शिल्प ज्यामीतिय आकृति में गतिशील वास्तु कला का उत्कृष्ट उदाहरण है। आपने अपने शिल्पों में कुछ शिल्प का प्राकृतिक सृजन अपने कल्पनालोक के आधार पर करते हुए वास्तविकता से पूर्ण प्रेरणा प्रस्तुत की है।

रविंद्रनाथ टैगोर की पंक्ति भजन—पूजन—अराधना सब पड़े रहने दो, ऐ अभागे, तु मंदिर के कोने में अपने भीतर से अँधेरे में डुबा हुआ किसकी पूजा में लगा है ? आँख खोल कर देख, तेरा देवता इस मंदिर में नहीं है, वह वहाँ है, जहाँ किसान मिट्टी खोद रहा है जहाँ मजदूर पत्थर तोड़ते हुए बिना थके मेहनत कर रहा है। इन पंक्तियों के साथ मूर्तिकार यही कहना चाह रहे हैं कि मंदिर के अंदर भगवान को खोजने से वे वहाँ कदापि नहीं मिलेंगे, वह तो अपने कर्त्तव्य पालन करने वालों के दिल में बसते है। मनुष्य को चाहिए कि वह अपने विचारों को आत्मसात कर अपने मानव मस्तिष्क के केन्द्र में हो रही उथल—पुथल को समझने का प्रयत्न करें। सफेद संगमरमर में बना प्रस्तुत शिल्प भारतीय वास्तुकला, भारतीय मन्दिर, गुफा तथा बावड़ियो से प्रेरित होकर बनाया गया है। 12 फीट में बना यह शिल्प बुद्ध के विचारों को दर्शाता हुआ बताया गया है। मूर्तिकार रॉबिन डेविड ने किसी एक मजहब सम्प्रदाय को लेकर काम नहीं किया बल्कि आपकी सोच की सीमा बेहद विशाल है। शिल्पों को दो भागों में बाँटा गया है। एक जिसमें गोल आकारनुमा स्तम्भ पर बुद्ध के विचारों का गुबज दर्शाया गया है और एक कक्ष दूसरे भाग में खाली रखा गया हैं जिसमें ध्यान लगाकर आत्मसात किया जाय। मूर्तिकार इस शिल्प के जरिए यह बताना चाह रहें है कि व्यक्ति बहुत खाली हो गया है। उसे अपने आपको पहचानने की जरूरत है। खाली खंडहर रूपी दूसरे भाग उस खाली हो गए मानव को अपने अंदर बैठकर अपने भीतर झांकने का मौका देना चाहता है। हमें विचार करने की जरूरत है, ध्यान लगाकर यह देखने की जरूरत है कि हम क्या थे और क्या से क्या बनते चले जा रहें है? शिल्प के प्रथम खंड में अंदर गोला और उपर तीन झरोंखे बने है जिसे मंदिरनुमा आकार दिया गया है। गोल गुंबज भगवान बुद्ध के माध्यम मार्ग पर उपदेश बताता हुआ बताया गया है। जिस तरह उन्होंने दुख ओर उसके कारण और निवारण के लिए आष्टांगिक मार्ग सुझाया और अंहिसा पर जोर दिया है, तृष्णा को सभी दुखों का मूल कारण बताया है। मनुष्य संसार के दुख चक्र में बस पिसता रहता है अतः इन सभी का सर्वागीण अनुकरण करने का जो मार्ग है, वही मुक्ति का मार्ग है। सम्यक, दृष्टि, सम्यक संकल्प, सम्यक वाक्, सम्यक कर्म सम्यक जीविका, सम्यक प्रयास, सम्यक स्मृति, सम्यक समाधि। मूर्तिकार अपने शिल्प के जरिए यह संदेश देना चाहते है कि मुनष्य अपने भीतर ध्यानास्थ हो विचार करे, इन आठ मार्गो पर ताकि वे आध्यात्मिक जीवन में प्रवेश पाकर अपना मूल्य जान सके अपने आपको पहचान सके।

रॉबिन डेविड का अब तक का जीवन अनेक किस्सों से बना है। इन किस्सों की स्मृति आपके शिल्पों में दिखलाई देती है। आपके शिल्प आपके अबतक की यात्रा से पुख्ता प्रमाण है, जिसमें रॉबिन डेविड अपनी यात्रा को खुबसुरती को तराशते हैं। रॉबिन अपने शिल्पों में उतना ही सच तराशते है जिस पर दर्शक टिक जाय। रॉबिन के शिल्पों में आधुनिक परंपरा का समावेश होने से वे इन शिल्पों को व्यावहारिकता से रचते है और आने वाली हर समस्या का निदान उसी पत्थर के अनुरूप होगा, यह तय है।

समय का सच बुनते हुए आपके शिल्प कल्पना की ऊँचाइयों में आने वाले वक्त में हर एक नवयुवक को उनके विशाल शिल्पों की भाँति विशाल सोच प्रदान करेगा।

संदर्भ ग्रंथ

[1] अखण्ड ज्योति नवंबर 2019 अंक 11
[2] रविन्द्रनाथ टैगोर – गीतांजलि, भारतीय प्रतिभाएँ राकेश नाथ विष्णु बुक प्रायवेट लिमिटेड
[3] रॉबिन के किस्से – कला दीर्घा अक्टूबर 2013 वाल्यूम 14 नंबर 27